अध्याय 3

नृत्यकारों की जीवनियाँ

बिंदादीन महाराज (1838–1918) :

कथक की लखनऊ शैली के प्रमुख स्तंभ, महान नृत्यकार व रचनाकार बिंदादीन महाराज का जन्म 1838 में हांडिया तहसील, जिला इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता पं. दुर्गा प्रसाद जी थे। अपने भाई कालका प्रसाद के साथ इन्होंने गहन शोध, चिंतन, मनन व साधना से लखनऊ नृत्य घराने की शैलीगत विशेषताओं को और अधिक सुगठित किया। 1857 की क्रांति के दौरान ये अपने पिता के साथ लखनऊ आ गए। इसके पश्चात् नेपाल, भोपाल आदि अनेक स्थानों पर गए, जहाँ इनका भव्य स्वागत, सम्मान व धन प्राप्ति हुई।

बिंदादीन महाराज कृष्ण के अनन्य उपासक थे। नित्य प्रति कृष्ण भक्ति तथा कोई न कोई रचना लिखना यही उनका क्रम था। बिंदादीन महाराज ने लगभग 5000 ठुमरी, भजन, होरी, दादरा, पद, झूला आदि की रचना की थीं। जिनमें राग व ताल की गहराइयों के साथ शृंगार रस का विशद वर्णन है। 'बिंदा कहत' नाम से इनकी ठुमरियाँ संगीत जगत की अमरनिधि है। पं. बिरजू महाराज के सम्पादन में रस–गुन्जन नामक पुस्तक में इनकी कुछ रचनाओं का संग्रह उपलब्ध है।

उदाहरण –बिंदा कहत ठुमरी

काह करूं देखो गारि देत कन्हाई रे।
मैं तो लाखन बार समझाई रे ।।
मटकी पकड़ मोरी झटकी पटकी
बिन्दा कहत, सगरे लोगन में, मोरी पत गंवाई रे ।।

प्रसिद्ध पखावज वादक कुदऊ सिंह के साथ एक नृत्य प्रदर्शन में तत्कार की गति इतनी द्रुत हो गई मानो पांव धरती से ऊपर, अधर में ही चल रहे हों, समस्त दरबार मंत्रमुग्ध था। नृत्य के दौरान वे सुंदर अचकन, चूड़ीदार पायजामा व दुपल्ली टोपी पहनते थे। हाथ में एक दुपट्टा लेकर सखी, यशोदा, माँ, नायिका आदि रूपों को साकार कर देते थे। कृष्ण के अभिनय में तो साक्षात् कृष्ण की उपस्थिति ही प्रतीत होती थी।

पं. बिंदादीन महाराज के कोई संतान नहीं थी, संपूर्ण जीवन अपने छोटे भाई कालका प्रसाद के साथ नृत्य की शैलीगत स्थापना, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, गीत रचना व कृष्ण सेवा में अर्पित किया। तीनों भतीजों – अच्छन महाराज, लच्छू महाराज व शंभू महाराज को निरंतर प्रशिक्षण देने में बिंदादीन महाराज का योग अधिक मानते हैं। बिंदादीन महाराज सदैव नृत्य, महफ़िल व नर्तकियों में व्यस्त रहते हुए भी शुद्ध सात्विक व

नियमित पूजा पाठी व्यक्तित्व के थे। सन् 1918 में इनकी मृत्यु हुई । कथक नृत्य शैली के विकास व संवर्द्धन में इनके अतुलनीय योगदान हेतु संगीत जगत सदैव इनका ऋणी रहेगा।

सितारा देवी (1920–2014)

नेपाल दरबार के दरबारी संगीतज्ञ व कालका बिंदादीन महाराज के दूर के रिश्ते के भाई प. सुखदेव प्रसाद की तीन पुत्रियाँ – अलकनंदा, तारा व धनलक्ष्मी (सितारा) में ये सर्वाधिक यश व प्रसिद्धि सितारा देवी को प्राप्त हुई। इनका जन्म 8 नवंबर 1920 को कलकत्ता में हुआ। धनतेरस के दिन जन्म होने से धनलक्ष्मी नाम रखा गया। एक विद्यालयी प्रस्तुति में सावित्री सत्यवान नृत्य नाटिका में धनलक्ष्मी ने दर्शकों का मन मोह लिया, अगले दिन समाचार पत्र में इतनी तारीफ पढ़कर इन्हें ''सितारा'' कहा गया जो इनकी पहचान बन गया।

प्रारंभिक शिक्षा पिता पं. सुखदेव मिश्र के कुशल निर्देशन में हुई तत्पश्चात् पं. लच्छू महाराज व शंभू महाराज से तालीम ग्रहण की। सितारा देवी के नृत्य में लखनऊ व बनारस दोनों घरानों की विशेषताऐं थी तथा तांडव व लास्य दोनों अंगों की अप्रतिम तैयारी भी। कथक के अलावा सितारा देवी ने भरतनाट्यम व मणिपुरी नृत्य की तालीम भी प्राप्त की। फिल्म जगत में भी अभिनेत्री के तौर पर अपार सफलता प्राप्त कीं । कथक की शास्त्रीय प्रस्तुति हेतु इन्होंने सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण किया।

सितारा देवी ने नृत्य व अभिनय के क्षेत्र में ऐसे समय में प्रवेश किया था जब कुलीन घरों में इसे सम्मानजनक नहीं माना जाता था। लेकिन पिता की निरंतर प्रेरणा व परिवार की सांगीतिक पृष्ठभूमि से इसमें मदद प्राप्त हुई। लेकिन उस समय सितारा देवी के प्रयासों को एक क्रांतिकारी प्रयास ही कहा जाएगा। अपने भाई चौबेजी की दो पुत्रियों – जयंती माला व प्रिय माला को गोद लेकर अत्यंत मनोयोग से उन्होंने नृत्य शिक्षा दी। इनके पुत्र रंजीत बारोठ फिल्म संगीत में सक्रिय हैं।मधुबाला, रेखा, माला सिन्हा, काजोल जैसी नायिकाओं को इन्होंने प्रशिक्षण दिया।

अनेक उपाधियों व अलंकरणों से सम्मानित सितारा जी को सबसे पहले व अप्रतिम सम्मान गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर से मात्र 16 वर्ष की आयु में ''**क्वीन ऑफ कथक**'' की उपाधि के रुप में हुआ।

संगीत नाटक अकादमी सम्मान (1969), पद्मश्री (1973), कालिदास सम्मान (1995), गुरू लच्छू महाराज के साथ ही खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की मानद उपाधि प्राप्त हुई। कथक नृत्याकाश पर सितारा देवी का नाम सदैव जगमगाता रहेगा। फिल्मी नृत्य निर्देशन को इन्होंने एक नई दिशा प्रदान की। सितारा जी ने कथक के प्रचार–प्रसार, सतत् प्रयोग व रचना धर्मिता के साथ एक लंबे युग तक नृत्य साधना व सेवा की। 25 नवंबर 2014 को मुंबई में आपका निधन हुआ। उनके प्रयास सदैव वंदनीय रहेंगे।

पं. सुंदरप्रसाद

जयपुर घराने के यशस्वी नृत्याचार्य पं. सुंदरप्रसाद जी की नृत्य शिक्षा अपने पिता पं.चुन्नीलाल तथा बड़े भ्राता पं. जयलाल से हुई तत्पश्चात लखनऊ घराने के पं. बिन्दादीन महाराज से शिक्षा प्राप्त की। पं.

सुंदरप्रसाद ने अपने चाचा पं. दुर्गाप्रसाद जी से भी नृत्य के गूढ़ तत्वों को ग्रहण किया। गुरूओं के प्रतिसच्ची श्रद्धा व निष्ठा इनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। इनकी गुरूभक्ति के अनेक किस्से भी सुने सुनाएं जाते हैं जो इनके व्यक्तित्व को आदरणीय व नई पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करते हैं।

सुंदरप्रसादजी के नृत्य में लखनऊ व जयपुर दोनों शैलियों का समावेश था। कठिन लयकारियों में तत्कार का प्रदर्शन, दोनों हाथों से अलग–अलग ताल की प्रस्तुति, गुलाल बिछाकर नृत्य करते हुए सुंदर आकृतियां बनाना, भावपक्ष की अद्भूत प्रस्तुति, उच्च श्रेणी के नर्तक व प्रशिक्षक थे। आपने अनेक गीतों की रचना की थी। रायगढ़ दरबार में आपको विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। राजा चक्रधर सिंह आपके नृत्य में चमत्कार व भावपक्ष के संयोग से अत्यंत प्रभावित थे।

आपने मुंबई में कथक नृत्य विद्यालय द्वारा लंबे समय तक नृत्य शिक्षा प्रदान की । 1958 में दिल्ली आकर नृत्य प्रशिक्षण प्रारंभ किया। 1964 में कथक केन्द्र नई दिल्ली में कथकाचार्य पद पर नियुक्त किए गए।

अनेक सम्मानों, पुरस्कारों व उपाधियों से विभूषित पं. सुंदरप्रसाद को 1959 में संगीत नाटक अकादमी सम्मान, 1960 में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुए।

आपकी शिष्य परंपरा में पं. मोहनराव कल्याणपुरकर, देवीलाल, सोहनलाल, दुर्गालाल, प्रियापंवार, रोशनकुमारी, मैडम मेनका, शीफ़ी वजीफदार, माणक चन्द जोधपुरी आदि प्रमुख नाम हैं।

30 मई 1970 को आपका स्वर्गवास हुआ। जयपुर घराने के अप्रतिम कथकाचार्य, गुरू भक्त, आदर्श शिक्षक के रूप में आप सदैव वंदनीय व प्रेरणादायी रहेंगे।

पं. बिरजु महाराज

लखनऊ घराने के प्रतिष्ठित कलाकार व कालका बिंदादीन जी की महान परंपरा के संवाहक, नृत्य शिरोमणि पं. बिरजु महाराज (मूल नाम–बृजमोहन मिश्रा) का जन्म 4 फरवरी 1938 को वाराणसी में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पिता अच्छन महाराज (जगन्नाथ महाराज) से हुई । लेकिन अल्पायु में ही पिता की मृत्यु के पश्चात् चाचा शंभू महाराज व लच्छू महाराज से भी शिक्षा प्राप्त की । सात वर्ष की अवस्था में बिरजु महाराज ने अपनी पहली प्रस्तुति दी तथा 13 वर्ष की अवस्था से नृत्य प्रशिक्षण भी देने लगे। बिरजु महाराज का सम्पूर्ण व्यक्तित्व नृत्यमयी है। बातचीत, हावभाव, चाल–ढाल यानि रग–रग में नृत्य अवस्थित है। इन्होंने संगीत भारती, भारतीय कला केन्द्र नई दिल्ली, कथक केन्द्र नई दिल्ली, में नृत्य गुरू के रूप में दीर्घ काल तक शिक्षा देने के बाद दिल्ली में स्वयं की संस्था ''कलाश्रम'' स्थापित की। कथक केन्द्र नई दिल्ली के प्रधान नृत्य आचार्य पद को आपने सुशोभित किया। पं. बिरजू महाराज शास्त्रीय गायन व वादन के भी श्रेष्ठ कलाकार हैं।

पं. बिरजू महाराज ने कई फिल्मों में भी नृत्य निर्देशन किया है जिनमें – देवदास, उमराव जान, डेढ़

इश्किया, बाजीराव मस्ताना आदि प्रमुख है। आपने कथक नृत्य में अनेक अभिनव प्रयोग व नृत्य नाटिकाओं की रचना की हैं– इनमें कुमार संभव, मालती माधव, गोवर्द्धन लीला आदि विश्व प्रसिद्ध हैं।

पं. बिरजू महाराज को ''पदम् विभूषण'' (1986), कालिदास सम्मान, नृत्य चूड़ामणि, संगीत नाटक अकादमी सम्मान, भरत मुनि सम्मान, लता मंगेशकर सम्मान (2002) तथा श्रेष्ठ नृत्य निर्देशन हेतु राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड (2012) प्राप्त हैं। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय व खैरागढ़ विश्वविद्यालय ने इन्हें डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की है।

इनके दो पुत्र पं. दीपक महाराज व पं. जयकिशन महाराज तथा पुत्री ममता महाराज इनकी परंपरा को आगे बढा रहे हैं। पं. बिरजू महाराज की विशाल शिष्य परंपरा में अनेकों अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिनाम कलाकार हैं, जिनमें सास्वती सेन, शोभना नारायण, प्रेरणा श्रीमाली, वेरोनिक अज़ान, दक्षा सेठ, राम मोहन, कृष्ण मोहन, विजय शंकर, प्रभा मराठे, काजल शर्मा, दुर्गा आर्या, प्रताप पंवार, शुभा व दर्शिनी बहनें आदि प्रमुख हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दू

- बिंदादीन महाराज लखनऊ घराने के स्तंभ, महान रचनाकार व कृष्ण भक्त थे।
- बाल्यकाल में ही प्रसिद्ध पखावजी कुदऊसिंह के साथ बिंदादीन महाराज ने अद्भुत नृत्य प्रस्तुत किया।
- वर्तमान में कथक नृत्य के श्रेष्ठतम आचार्यों में पं. बिरजू महाराज का नाम है।
- पं. बिरजू महाराज कथक केन्द्र, नई दिल्ली के प्रधान आचार्य तथा ''कलाश्रम'' के संस्थापक हैं।
- श्रेष्ठ नृत्यांगना व अभिनेत्री के तौर पर सितारा देवी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगार ने सितारा देवी को ''क्वीन ऑफ कथक'' की उपाधि से नवाज़ा था।
- पं. बिंदादीन महाराज (जन्म – 1838, मृत्यु –1918), पं. सुन्दर प्रसाद (मृत्यु –1970), सितारा देवी (जन्म–1920, मृत्यु –2014), पं. बिरजू महाराज (जन्म–1938)
- कठिन लयकारियों के प्रदर्शन, दोनों हाथों से अलग अलग ताल की प्रस्तुति, भाव पक्ष के साथ चमत्कार प्रदर्शन पं. सुंदरप्रसाद के नृत्य के विशेष गुण थे।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. ''बिंदा कहत'' नाम से नृत्य रचनाओं के रचनाकार थे।
   (अ) वाजिद अली शाह (ब)पं. सुंदर प्रसाद जी
   (स) बिंदादीन महाराज (द) सितारा देवी
2. ''कलाश्रम'' संस्था के संस्थापक हैं ?
   (अ) पं. उदयशंकर (ब) पं. बिरजू महाराज
   (स) राजा चक्रधर सिंह (द) सोनल मानसिंह
3. पं. सुंदर प्रसाद जी किस घराने के नृत्यकार थे ?

(अ) जयपुर घराना (ब) रायगढ़ घराना
(स) बनारस घराना (द) लखनऊ घराना

4. पं. बिरजू महाराज को 'पद्म विभूषण' किस वर्ष प्राप्त हुआ था ?
(अ) 1980 (ब) 1986 (स) 1995 (द) 2012

5. सितारा देवी के पिता का नाम क्या था ?
(अ) पं. सुखदेव मिश्र (ब) पं. छन्नूलाल मिश्र
(स) राजन–साजन मिश्र (द) पं. कालका प्रसाद

6. सितारा देवी को ''क्वीन ऑफ कथक'' की उपाधि किसने प्रदान की ?
(अ) भारत सरकार (ब) महात्मा गाँधी
(स) रविन्द्र नाथ टैगोर (द) जवाहरलाल नेहरू

7. सितारा देवी का मूल नाम क्या था ?
(अ) अलकनंदा (ब) तारा देवी
(स) धनलक्ष्मी (द) अमला शंकर

8. ''रस गुंजन'' नामक पुस्तक में किनकी रचनाओं का संग्रह है ?
(अ) बिंदादीन महाराज (ब) बिरजू महाराज
(स) अच्छन महाराज (द) सितारा देवी

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1 बिंदादीन महाराज किस प्रकार की वेशभूषा पहनते थे?
2 बिंदादीन महाराज की कोई रचना लिखिए?
3 सितारा देवी ने नृत्यकीशिक्षा कैसे प्राप्त की?
4 पं. बिरजू महाराज को प्राप्त सम्मान व पुरस्कारों का उल्लेख कीजिए?
5 पं. सुंदर प्रसाद जी का परिचय लिखिए?

चित्र पहचानकर नाम लिखिए–

उत्तर–(1) स (2) ब (3) अ (4) ब (5) अ (6) स (7) स (8)अ

शिक्षकों हेतु अनुदेश

- निम्न कलाकारों के चित्र संग्रहित करके संगीत कक्ष में लगवावें।
- इनके जीवन चित्रण संबधी प्रोजेक्ट कार्य करवावें।